3

पाठ्येतर सामग्री और जेंडर का मुद्दा

लता पाण्डे*

जेंडर का मुद्दा समूची मानवता का मुद्दा है। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में भी इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जा रहा है कि जेंडर के मुद्दे को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करने वाली विषय सामग्री का समावेश किया जाए। शिक्षक प्रक्रिया के दौरान पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ पाठ्येतर साहित्य का भी उपयोग किया जाए तो सीखने-सिखाने में विविधता लाई जा सकती है। कैसे? जानने के लिए पढ़िए यह लेख।

प्रस्तावना

संविधान के अंतर्गत धर्म, जाति, वंश और लिंग आदि आधारों पर सबको समानता का अधिकार दिया गया है। स्वतंत्र भारत में बदलते समाज के साथ महिलाओं की स्थिति में भी बदलाव आया है। उनकी साक्षरता दर बढ़ी है, वे आत्मनिर्भर हुई हैं, प्रत्येक कार्य क्षेत्र में उन्होंने अपनी पहचान बनाकर यह सिद्ध कर दिया है कि समान अवसर मिले तो वे आसमान की बुलंदियों को छू सकती हैं। लेकिन इन बदलावों के बावजूद महिलाओं को लेकर हमारी सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं, मानक व्यवहारों और सोच में अपेक्षित बदलाव नहीं आया है।

लिंग आधारित भेदभाव जनित रूढ़िग्रस्त मानसिकता में बदलाव लाना एक चुनौती है। इस चुनौती का सामना शिक्षा व्यवस्था में सुनियोजित बदलाव लाकर किया जा सकता है। इसके लिए अनेक प्रयास भी किए जा रहे हैं। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। बीच में ही शाला त्यागने वाली बालिकाओं के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जैसी योजना

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली

की शुरुआत भी की गई है। पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में भी इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जा रहा है कि लैंगिक समानता के दृष्टिकोण का विकास करने वाली विषय सामग्री का समावेश इनमें किया जाए।

पाठ्यपुस्तकें शिक्षण का एक साधन हैं, एकमात्र साधन नहीं। शिक्षण प्रक्रिया के दौरान पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ पाठ्येतर सामग्री का भी उपयोग किया जाए तो सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाया जा सकता है। विशेषत: लिंग संबंधी मुद्दों के लिए जहाँ संवेदनशीलता अति आवश्यक है, इस प्रकार की पाठ्येतर सामग्री के माध्यम से कक्षा में इन मुद्दों पर चर्चा की जा सकती है।

पाठ्येतर सामग्री की आवश्यकता

आमतौर पर पाठ्यपुस्तक को पाठ्यचर्या की मुख्य कार्यस्थली माना जाता है। यह सच है कि पाठ्यपुस्तक बच्चों को तथ्यात्मक विषयगत जानकारी के साथ अंत:क्रिया के अवसर भी देती है। लेकिन पाठ्यपुस्तकों के साथ अन्य सामग्री भी विकसित की जाए तो पाठ्यचर्या को और भी रोचक तथा ग्रहणीय बनाया जा सकता है। अतिरिक्त पठन सामग्री की आवश्यकता को कोई भी नकार नहीं सकता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अन्य पठन सामग्री की आवश्यकता पर बल देती है। पढ़ने की संस्कृति के विकास के क्रम में वैयक्तिक पठन को प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है और शिक्षकों को इस संस्कृति का हिस्सा बनकर स्वयं उदाहरण पेश करना चाहिए। इसके लिए स्कूल और सामुदायिक स्तर पर पुस्तकालयों को बढ़ावा देने की ज़रूरत है। यह मान्यता कि कथा-उपन्यास पढ़ना समय नष्ट करना है, पठन को हतोत्साहित करने का बड़ा कारण है। सभी स्कूली विषयों और स्कूल के सभी स्तरों पर पूरक पठन-सामग्री का विकास और उनकी आपूर्ति की तत्काल आवश्यकता है। इस प्रकार की काफ़ी सामग्री बाज़ार में उपलब्ध है, यद्यपि उनकी गुणवत्ता में काफी अंतर है, परंतु उनका कक्षा में पठन-पाठन के दौरान उपयोग किया जा सकता है। कक्षा में व्यवस्थित रूप से ऐसी सामग्री का उपयोग किया जाए तो विषयों के शिक्षण में विस्तार होगा। लेकिन विद्यालयों में पढ़ने का संबंध केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित होकर रह जाता है। शिक्षक सोचते हैं कि पुस्तकों को पढ़ाना ही पाठ्यक्रम पूर्ण करना है और यही उनका लक्ष्य है। अभिभावक भी स्कूल से यही अपेक्षा रखते हैं। स्कूल बच्चों को इस तरह पढ़ना नहीं सीखा पाते कि वे अपने आप किताबें ढूँढें और जानकारी के लिए पढ़ें, आनंद के लिए पढ़ें और उनमें पढ़ने की स्थायी रुचि विकसित हो। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों को ऐसी सामग्री से परिचित कराए जाने की आवश्यकता और उन्हें ऐसे मानदंड बताए जाने की ज़रूरत की संस्तुति करती है ताकि वे प्रभावी ढंग से पठन सामग्री का चुनाव और उपयोग कर सकें।

पाठ्यपुस्तक से इतर पाठ्यसामग्री बच्चों को बहुत आकर्षित करती है। इसका प्रमुख

कारण यह है कि इन्हें पढ़ने के दौरान बच्चों को इस बात की चिंता नहीं रहती कि पढ़ने के बाद प्रश्न पूछे जाएँगे। इसके साथ ही पाठ्येतर सामग्री अवकाश के समय में पढ़ने के लिए या मनोरंजन के साधन के रूप में प्रयोग की जाती हैं जिस कारण बच्चे बिना लोभ के, पढ़ने के लिए पढ़ना या खेल के लिए इन्हें पढ़ते हैं। दूसरा कारण इनका स्वरूप है, रोचक कविता और कहानी की किताबें सहज ही बच्चों में पढ़ने की ललक जाग्रत करती हैं। पाठ्येतर सामग्री का आकार पाठ्यपुस्तक की भाँति एक निश्चित ढाँचे में नहीं होता। विभिन्न आकार की किताबें बच्चों को अच्छी लगती हैं। पाठ्यपुस्तक से हटकर इनमें चित्र भी रंगीन तथा बड़े होते हैं। इसके अतिरिक्त इनमें विधाओं का फलक विस्तृत होता है। कहानी, कविता, नाटक बच्चों को अच्छे लगते हैं। किताबें यदि कहानी की हों तो बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। कहानियाँ बच्चों को लुभाती हैं और कहानियाँ यदि उनके अपने परिवेश, जीवन से जुड़ी हों तथा कहानियों के ताने-बाने में लड़के-लड़कियों के एक साथ खेलने-कूदने, तरह-तरह की शरारतें करते, एक तरह के खेल खेलने, लड़कियों द्वारा अपनी बात का मान रखवाने जैसी बातें बुनी गई हों तो नन्हे बच्चों के दिलों में लैंगिक समानता का भाव पनपते देर नहीं लगती। एक बार यह भाव मन-मस्तिष्क में एक गहरी समझ के साथ अंकुरित हो गया तो ताउम्र बना रहता है।

पाठ्येतर सामग्री का चयन

पाठ्येतर सामग्री अपनी विविधता और रोचकता के कारण बच्चों को आनंदप्रद लगती है। इसलिए विषय ज्ञान देने के साथ ही बच्चों में मूल्यों के विकास हेतु इसका उपयोग किया जा सकता है। सर्वप्रथम यह जानना ज़रूरी है कि किस प्रकार की अतिरिक्त पठ्न-सामग्री का चयन किया जाए जो कि बच्चों में लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करें।

चयन के आधार बिंदु

- पाठ्येतर सामग्री बच्चों की आयु, रुचि तथा परिवेश के अनुकूल हों।
- भाषा सरल तथा सरस हो।
- विधाओं का विस्तृत फलक हो। विभिन्न विधाओं कविता, कहानी, नाटक, भेंटवार्त्ता, समाचार, लोककथा, लोकगीत आदि का चयन बच्चों की भाषा की कक्षा में रुचि बनाए रखने में सहायक होगा।
- आमतौर पर किताबों में लड़कों को साहसी कार्य करते, अपनी विवेकशीलता का परिचय देते, निर्णय लेते दर्शाया जाता है और लड़कियों के कार्यक्षेत्र का दायरा घरेलू कार्यों, उनकी दूसरों पर निर्भरता, उनमें निर्णय लेने की क्षमता का सर्वथा अभाव दिखाया जाता है। लड़कों के मर्दानगी (पुरुषार्थ) से भरपूर कार्यों का चित्रण होता है जो कहीं-न-कहीं लैंगिक रूढ़िबद्धता को बढ़ावा देता है और साथ ही लैंगिक असमानता को बढ़ावा देता है। ऐसी किताबों का चयन करें जो इन परंपराओं को तोड़ती हों, जिनकी बालिका पात्र वे सब कार्य करती हैं जो उनके समवयस्क लड़के करते हैं। साथ ही यदि किताब पितृसत्ता या पुरुष वर्चस्व व

रूढ़िबद्धता को दर्शाती भी है तो बच्चों के सामने सवाल खड़े किए जा सकते हैं। यह आवश्यक नहीं कि बिना सवाल किए मान ली गई परंपराओं में बदलाव की आवश्यकता नहीं। इस विषय में संवेदनशीलता बदलाव के लिए एक पहल हो सकती है। इसलिए बच्चों को आपस में चर्चा करने का मौका मिले, बच्चे तर्क दें, अपने विचार स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करें। कक्षा तथा कक्षा के बाहर बच्चों द्वारा की गई चर्चा उनकी सोच में सकारात्मक बदलाव अवश्य लाएगी।

- ऐसी अनेक किताबें सुलभ हैं जिनमें वीर महिलाओं जैसे—रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गाबाई, कित्तूर की रानी चेनम्मा आदि की गाथाएँ हैं। प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर वीर बच्चों को पुरस्कृत किया जाता है। सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में इन बच्चों द्वारा किए गए साहसिक कार्यों का उल्लेख रहता है। साहसी बालिकाओं से संबंधित सामग्री एकत्रित कर कक्षा में उस पर बातचीत करें तो ऐसी सामग्री निश्चित ही पाठक बच्चों को भी ऐसा ही कुछ साहसिक कदम उठाने की प्रेरणा देगी। साथ ही अपने अंदर निहित शक्तियों को टटोलने का एक मौका भी देगी। कई बार लोग क्या कहेंगे ऐसा सोचकर क्षमता होते हुए भी हम उस कार्य को करने का संबल नहीं जुटा पाते। ऐसी स्थिति में इस प्रकार की पाठ्येतर सामग्री बच्चों को विशेष रूप से बालिकाओं को आत्मविश्वासपूर्वक निर्णय लेने और कदम उठाने की ओर अग्रसर करेगी।
- इसी प्रकार शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, खेल आदि विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान करने वाली महिलाओं से संबंधित सामग्री का कक्षा में उपयोग जहाँ बालिकाओं के हृदय में कुछ विशेष करने की भावना का संचार करेगा वहीं बालकों को भी यह एहसास कराएगा कि समय और समान अवसर मिले तो लड़कियाँ भी बहुत कुछ कर सकती हैं। बालक भी कई ऐसे कार्य करने के लिए उत्सुक व आतुर हो सकते हैं, जो सामाजिक मान्यताओं व रूढ़िबद्धता के कारण उनके लिए वर्जित हैं।
- सांस्कृतिक दृष्टि से भारत बहुत समृद्ध है। यहाँ हर प्रदेश में अपनी लोककथाएँ हैं। आमतौर पर लोककथाओं में नारी पात्रों को लेकर पूर्वाग्रह हैं। लेकिन अनेक लोककथाएँ ऐसी हैं जिनमें नारी पात्रों को अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए वीरतापूर्ण कारनामे करते चित्रित किया गया है। ऐसी ही लोककथाओं का चयन करें। ऐसी लोककथाओं को सुनने/पढ़ने के दौरान बच्चों के हृदय में स्वतः ही यह सोच विकसित होती है कि महिलाएँ बहादुरी में किसी से कम नहीं है। इस प्रकार की कुछ लोककथाओं के उपयोग के बाद ऐसी लोककथाएँ भी बच्चों को सुनायी जा सकती हैं अथवा उन्हें पढ़ने को दी जा सकती हैं जिनमें नारी पात्र की छवि सकारात्मक नहीं है। लोककथा सुनाने/पढ़ने के बाद

बच्चों से उस नारी पात्र के बारे में चर्चा की जा सकती है। पूर्व में पठित नारी की सकारात्मक छवि वाली लोककथाएँ निश्चित रूप से बच्चों को चर्चा करने के लिए प्रेरित करेंगी और वे स्वयं ही अपनी बात कहने को उद्यत होंगे। इस प्रकार की चर्चाएँ एक अच्छा माध्यम हैं। कक्षागत वाद-विवाद के ज़रिये यदि किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाए तो वह तर्कसंगत होगा व लंबे समय तक मानस पटल पर रहेगा।

जेंडर और क्रमिक पुस्तकमाला — बरखा

अतिरिक्त पठन सामग्री के रूप में पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली द्वारा विकसित **क्रमिक पुस्तकमाला—बरखा** की चालीस कहानियाँ पाँच कथावस्तुओं में पिरोई गई हैं। बच्चों के जीवन से जुड़ी ये कहानियाँ बच्चों को अनुमान लगाकर पढ़ने का अवसर देती हैं साथ ही जेंडर के मुद्दे को लेकर स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास भी अत्यंत सहजता से करती हैं। इसलिए पुस्तकमाला की कहानियाँ यहाँ उदाहरणस्वरूप दी जा रही है।

बुद्धि कौशल का परिचय देती बालिकाएँ

बरखा की कहानियों में गूँजते बालक-बालिकाओं के समान स्वर — कहानियाँ चाहे वे पाठ्यक्रम के पन्नों पर छपी हों या पाठ्येतर किताबों में, तर्कसंगतता, सोचने और तरकीब सुझाने जैसे बुद्धि कौशल से भरपूर कार्य अधिकतर लड़कों के ही जिम्मे रहते हैं। इसके पीछे रूढ़िग्रस्त सोच रहती है कि चिंतन कौशल से लड़कियों का क्या वास्ता? बरखा की कहानियों ने इस मिथक को तोड़ा है। बरखा की पाँच कथावस्तुओं की बालिका पात्र बबली, तोसिया, मिली बुद्धि, चातुर्य, सूझ-बूझ में अपनी सानी नहीं रखतीं। कहानी **झूला** में जीत कहता है कि उसे झूला झूलने में बहुत मज़ा आता है। जीत और बबली झूला ढूँढने लगते हैं। दोनों पेड़ की डाली पर लटककर झूलते हैं, पर उन्हें ज़्यादा मज़ा नहीं आता। फिर लोहे के पाइप पर लटककर झूलते हैं। इतने में बबली की नज़र एक टायर पर पड़ती है। उसे झट एक तरकीब सूझती है कि क्यों न टायर को लटकाकर उसे ही झूला बनाया जाए! वह टायर को हवा में उछालती है। टायर पेड़ की डाली पर जाकर लटक जाता है। जीत

उछलकर टायर पर बैठ जाता है और बबली पीछे से धीरे-धीरे उसे झुलाने लगती है। इस प्रकार इस कहानी में बबली न केवल अपनी बुद्धि का परिचय देकर झूलने का तरीका सुझाती है बल्कि टायर को उछालकर पेड़ में लटका झूला भी बनाती है। इतना ही नहीं अगर यह कहानी आम पारंपरिक कहानी होती तो इसमें लड़की झूले पर बैठती और लड़का उसे झुलाता पर इस कहानी में बबली जीत के झूले पर बैठने पर झूले को झुलाती भी है। ऐसा भी नहीं है कि हमारे आस-पास ऐसा नहीं होता है या होता था, किंतु इस प्रकार के उदाहरणों को प्राय: नज़रअंदाज़ करने की एक प्रवृति दिखती है। यह पुस्तकमाला अपवाद स्वरूप समानता के भाव को संजोये हुए काफ़ी हद तक वास्तविकता को उजागर करती है।

इसी प्रकार से सूझ-बूझ का परिचय बबली देती है कहानी **आउट** में। वह क्रिकेट खेलने का प्रस्ताव रखती है। खेलते-खेलते गेंद खोजने पर जीत के कहने पर कि गेंद तो है ही नहीं, वह कपड़े की कतरनों से गेंद बनाती है। **बबली का बाजा** कहानी में भी घर की सफ़ाई के दौरान बबली को एक डिब्बा मिलता है जिसे बजाने पर वह बजता है। उस डिब्बे के अंदर चावल के दाने हैं। बबली उस डिब्बे को लेकर सो जाती है। रात में चूहा चावल खा लेता है। दूसरे दिन बबली माँ से चावल माँगती है तो माँ कहती हैं कि चावल खेलने की चीज़ नहीं है। बबली उदास हो जाती है। वह छत पर जाती है। रस्सी पर टंगे कपड़ों को देखकर उसे एक उपाय सूझता है। वह सलवार से नाड़े को निकालकर डिब्बे के दोनों ओर छेदकर बाँधती है और ढोलक बना देती है।

इस प्रकार अपनी तत्पर बुद्धि से समस्या को सुलझाती हुई ये नन्हीं बालिकाएँ अपनी हमउम्र पाठक बालिकाओं को भी ऐसा ही कुछ करने का संदेश तो देती है साथ ही बच्चों के हृदय में

भी यह बात बैठा देती हैं कि लड़कियाँ किसी भी दृष्टि में लड़कों से हीनतर नहीं हैं। अवसर मिले तो सब कुछ कर सकती हैं। बहुत-सी लड़कियाँ बबली की तरह सोचती होंगी पर अवसरों व प्रोत्साहन के अभाव में अपनी समझ, तथा कौशल को उजागर नहीं कर पातीं।

स्वतंत्र अस्तित्व रखती बालिकाएँ

आज लड़कियाँ हर क्षेत्र में लड़कों से बराबर का मुकाबला कर रही हैं। वे किसी भी कार्य में लड़कों से पीछे नहीं हैं। वे हर काम करना चाहती हैं, सब कुछ सीखने की ललक उनमें है। **मिली की साइकिल** कहानी में मिली की साइकिल सीखने की इच्छा, फिर उसका साइकिल सीखना आज की लड़की का सजीव चित्रण है। मिली की माँ द्वारा साइकिल सीखने में उसकी मदद करना भी आज के समाज की

हर भारतीय माँ का प्रतिनिधित्व करता है जो चाहती है कि उसकी बेटी आगे बढ़े और समय की रफ़्तार से चले। मिली अपने व्यवहार से पाठक बच्चों को अनेक संदेश देती है। मिली को छोटे खुले बाल रखना पसंद है। उसकी माँ जब उसकी चोटी गूँथती तो उसे दर्द होता। एक दिन वह एक तरकीब लड़ाती है और अपने पिता के संग बाजार जाकर बाल कटवा कर आती है। लौटकर घर आने पर माँ प्यार से उसके बालों में हाथ फेरकर उसे गले लगा लेती हैं। इस प्रकार मिली की अपनी इच्छा का मान रह जाता है। वह जता देती है कि उसका भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व है, अपनी इच्छाएँ हैं, पसंद-नापसंद है जिनका ध्यान रखा जाना चाहिए।

मिल-जुलकर कार्य करने वाले बालक पात्र

घर और रसोई से संबंधित काम लड़कियों के ही लायक माने जाते हैं और अकसर कहानी की किताबों में महिला पात्र ही ये सब करती दिखाई जाती हैं। लेकिन बरखा के बाल पात्र जमाल और मदन रसोई के कार्यों में भरपूर रुचि लेते हैं। **चाय** कहानी में जमाल के जुकाम से पीड़ित होने पर उसका दोस्त मदन उसके लिए अदरक, काली मिर्च की चाय बनाता है। **फूली रोटी** में जमाल रोटी बनाने की कोशिश करता है और रोटी के फूलने पर बड़े गर्व से कहता है कि रोटी उसने बनायी है। भुट्टा कहानी में घर में मेहमानों के आने पर माता-पिता की अनुपस्थिति

में जमाल और मदन न केवल उनका स्वागत करते हैं बल्कि उनके लिए **भुट्टा** भी उबालते/भूनते हैं। **चावल** कहानी में भी जमाल और मदन चावल बनाते हैं। **पत्तल** कहानी में सभी बच्चे मिलकर पत्तल ढूँढने का काम करते हैं। इस प्रकार बरखा की कहानियाँ सभी बच्चों में मिल-बाँटकर घर के कामों में हाथ बटाने की भावना जगाती हैं।

खेल में अगुवाई करती बालिकाएँ

बच्चों को खेलना अच्छा लगता है। इसलिए बच्चों की कहानियों में खेल ज़रूर शामिल रहते हैं। बरखा की चालीस कहानियों में भी बच्चों के खेलने-कूदने का चित्रण है। पर विशेषता यही है कि इन कहानियों में लड़कियों के खेल केवल गुड़िया खेलने या घर के अंदर खेले जाने वाले खेल खेलने तक सीमित नहीं है। वे कभी पतंग उड़ाती हैं तो कभी गुल्ली-डंडा भी खेलती दिखाई पड़ती हैं। खेल में अगुवाई भी करती है। **गिल्ली-डंडा** कहानी में खेलने के दौरान गिल्ली तालाब में गिर जाती है तो बबली तालाब में कूदकर गिल्ली निकालती है और ज़ोर से डंडा घुमाकर गिल्ली को हवा में उछाल देती

है। इसी प्रकार **छुपन-छुपाई** कहानी में नाज़िया खेल के दौरान ऊपर से कूदकर धप्पा करती है।

पतंग उड़ाना जैसे कुछ खेलों पर लड़कों का ही वर्चस्व छाया रहता है। अगर इनसे संबंधित किसी कहानी में बालिका पात्र हो तो वह या तो भाई के लिए मांझा तैयार करती है या भाई के पतंग उड़ाने के दौरान उसे मांझा पकड़े दिखाया जाता है। **हमारी पतंग** कहानी इस भ्रम को भी तोड़ती है कि पतंग लड़के ही उड़ा सकते हैं। इस कहानी में तोसिया और मिली पतंग उड़ाने का भरपूर मज़ा लेती हैं और उनकी पतंगें आसमान छूती हैं। वह अपनी माँ के साथ मिलकर पतंग उड़ाती हैं। यह एक लैंगिक मिथक तोड़ने का अच्छा उदाहरण हो सकता है जो प्रायः लड़कियों के लिए गैर-पारंपरिक माने जाने वाले खेल में माँ की स्वीकृति एवं भागीदारी को दर्शाता है।

बरखा की कहानियों में खेल के दौरान लड़कियाँ लड़कों से आगे भी रहती हैं। आउट कहानी में बबली कपड़े की कतरनों से गेंद बनाती है। वह गेंद उठाती हैं, जीत बल्ला उठाता है। गेंद खुलकर हवा में फैल जाती है तो बबली उछलकर कपड़ा पकड़कर चिल्लाती है—आउट। इस प्रकार विजयश्री का ताज बबली ही पहनती है।

समान अवसर प्राप्त करती बालिकाएँ

हमारे समाज में अधिकतर लड़कियों के लिए संगीत गायन तक ही सीमित कर दिया जाता है। वादन के क्षेत्र में उन्हें अवसर दिया भी जाता है तो हारमोनियम, सितार तक। लेकिन तबला कहानी में बबली तबला बजाने की इच्छा ज़ाहिर करती है और पिताजी कहते हैं कि सुबह बबली को तबला बजाना सिखाएँगे, शाम को

जीत को। हालाँकि शुरुआत में जीत इस बात से नाराज़गी दिखाता है लेकिन जीत बाद में इस बात को समझ जाता है कि जिसको जो पसंद हो, वही करना चाहिए। यह अवसरों की समानता के साथ-साथ उन तक पहुँचने का एक सटीक संदेश है।

बरखा की कहानियों के बाल-पात्र चाहे वे भाई-बहन हों या संगी-साथी मिलजुल कर सारे काम निपटाते हैं। बबली, मिली, तोसिया, नाज़िया जहाँ नए खेल सुझाती हैं वहीं खेल की सामग्री भी बनाती हैं और खेल की अगुवाई भी करती हैं। इनके नन्हे दिल उमंग, उत्साह, जोश से भरे हैं। ये हर काम करना चाहती हैं, सब कुछ सीखना चाहती हैं। अपना अस्तित्व बनाए रखने का हौसला रखती हुई ये अपने हमउम्र नन्हे पाठक साथियों से मानो कहती हैं—कर लो दुनिया मुट्ठी में। साथ ही कहानी के बालक पात्र प्राय: सामाजिक तौर पर वर्जित क्षेत्र 'रसोई घर' में चाय, खाना व मेहमानों का स्वागत करते हुए उत्साहित नज़र आते हैं। इस प्रकार बरखा की कहानियों में लड़के-लड़कियाँ दोनों के ही स्वर समान रूप से मुखरित हुए हैं। दोनों को ही गरिमा के साथ प्रस्तुत किया गया है। बरखा की विभिन्न कहानियों में बच्चे चाय, खाना बनाने तथा मेहमानों का स्वागत करते हुए उत्साहित नज़र आते हैं। न केवल लड़कियों अपितु लड़कों से भी जुड़े हुए जेंडर मिथक को सवाल करने का प्रभावशाली प्रयास है बरखा पुस्तकमाला।

क्रमिक पुस्तकमाला — बरखा की कहानियाँ उदाहरणस्वरूप यहाँ दी गई हैं। पाठ्येत्तर सामग्री के चयन के दौरान भी आधार बनाया जा सकता है।

पाठ्येतर सामग्री — चित्र, कविता, कहानी आदि

भाषा सीखने में कविताओं का आश्चर्यजनक योगदान रहता है। कविताएँ अपनी लय और तुकबंदी के कारण बच्चों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इसलिए भाषा की कक्षा में पाठ्यपुस्तक से इतर कविताओं को स्थान देना बच्चों को भाषा सीखने की ओर अग्रसर करना है। कविताओं के माध्यम से बच्चों में सौंदर्यानुभूति विकसित करने साथ ही जेंडर के मुद्दे के प्रति भी सकारात्मक रवैया विकसित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए एक कविता यहाँ दी जा रही है—

दादा चाहते मैं बनूँ प्रोफेसर
माँ चाहती सीखूँ कंप्यूटर।
पापा चाहते मैं बनूँ अफ़सर
चाचा चाहते बनाना डॉक्टर।
दीदी चाहती मैं बनूँ इंजीनियर
भैया चाहते बनाना कलक्टर।
लेकिन मैं खुद तय करूँगी
क्या बनूँगी आगे चलकर?

आमतौर पर घर में निर्णय लेने का कार्य घर के पुरुष सदस्य करते हैं। यह कविता इस मिथक को तोड़ती है कि निर्णय लेना केवल पुरूषों का ही कार्य है। इसमें दादा, पापा, चाचा,

और भैया के साथ माँ और दीदी की भी इच्छा दर्शायी गई है। सबसे अच्छी बात तो ये है कि कविता की बालिका बातें तो सबकी सुनती है पर तय करती है कि वह स्वयं यह निर्णय लेगी कि उसे क्या बनना है।

बच्चों के लिए विकसित किताबों में निहित चित्र किताब को तो आकर्षक बनाते ही हैं, इन्हें दिखाकर उनसे कितनी ही बातें की जा सकती हैं — लड़के-लड़की मिलकर खेल रहे हैं। लड़की सबसे आगे रेल का इंजन बनकर खड़ी है। वह सब बच्चों की अगुवाई कर रही हैं। कक्षा में घर का कोई ऐसा चित्र भी दिखाकर बच्चों से बातचीत की जा सकती है जिसमें घर के सभी सदस्य मिल-जुलकर काम कर रहे हैं। चित्र बच्चों को संदेश देने का एक सशक्त माध्यम हैं। कक्षा में विज्ञापनों को भी स्थान दिया जा सकता हैं। कम शब्दों में अधिक बात रखने वाले विज्ञापनों के वाक्य/गीत बच्चों के मन आसानी से रच-बस जाते हैं। ऐसे विज्ञापनों का चयन करें जो नारी की सशक्त छवि प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार के विज्ञापनों पर कक्षा में बातचीत समूह में मिलकर बनने के लिए कहा जा सकता है।

शिक्षक की भूमिका

पाठ्येतर सामग्री का कक्षा में सफल उपयोग तभी किया जा सकता है जब शिक्षक कुछ आवश्यक बातों को दृष्टिगत रखे।

पाठ्येतर सामग्री की आवश्यकता से अवगत होना

शिक्षक द्वारा कक्षा में पाठ्येतर सामग्री का उपयोग उचित रीति से करने हेतु सर्वप्रथम आवश्यक है कि शिक्षक स्वयं पाठ्येतर सामग्री की आवश्यकता और उपयोगिता से परिचित हों। शिक्षक को पाठ्यपुस्तक से इतर पुस्तकों के विषय में जानकारी होनी भी निहायत ज़रूरी है।

चयन के बिंदु

पाठ्येतर सामग्री के चयन में सतर्कता रखनी आवश्यक है। पुस्तक के शीर्षक से उसके कलेवर का अनुमान लगाना उचित नहीं। कई बार ऐसा होता है कि पाठ्यसामग्री पुस्तक के शीर्षक से मेल नहीं करती। अतएव पुस्तकों को बच्चों के लिए उपलब्ध करवाने से पूर्व अवश्य पढ़ लें। चयनित किताब/रचना रोचक हो, बच्चे की आयु तथा परिवेश के अनुकूल हो, भाषा सरल तथा सरस हो। पुस्तकों के चयनोपरांत उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करें। चयन करते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि चयनित पुस्तक/रचना लैंगिक समानता की दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण रखती हो। इस संबंध में चयन के आधार बिंदुओं को दृष्टिगत रखना अत्यंत आवश्यक है। ऐसा नहीं है कि लैंगिक असमानता दर्शाती पुस्तकों का प्रयोग लैंगिक संवेदनशीलता जागरूक करने के लिए नहीं किया जा सकता यह भी एक अच्छा माध्यम हो सकती हैं बशर्ते शिक्षक कक्षा में उन पर चर्चा करें।

पाठ्येतर सामग्री का पूर्व पठन

किसी भी कविता या कहानी की पुस्तक के कक्षा में प्रयोग से पूर्व शिक्षक द्वारा स्वयं उसे पढ़ना अत्यंत आवश्यक है ताकि बच्चों को सुनाने अथवा पढ़ने हेतु कहने से पूर्व शिक्षक उससे संबंधित जानकारी उन्हें दे सके। कविता या कहानी को पहले ही पढ़ने से शिक्षक बच्चों में उसके प्रति रुचि भी जाग्रत कर सकता है।

पाठ्येतर सामग्री की उपलब्धता तथा उपयोग

शिक्षक हमेशा यह बात याद रखे कि मूल्य विकसित किए जा सकते हैं, थोपे नहीं जा सकते। इसलिए पाठ्येतर सामग्री के कक्षा में उपयोग से पूर्व कभी भी बच्चे से यह कहने की भूल ना करें कि इस कहानी/कविता से तुम्हें यह सीख मिलेगी। इसी प्रकार कहानी/कविता सुनाने के बाद बच्चों से यह प्रश्न भी नहीं करें कि कहानी/कविता से उन्हें क्या शिक्षा मिली? बेहतर यही है कि बच्चों से उस पढ़ी गई या सुनी गई रचना पर चर्चा करें और बातों ही बातों में उसमें निहित संदेश की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। पाठ्येतर सामग्री का कक्षा में किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है और उसमें शिक्षक की क्या भूमिका हो? इसे विस्तृत रूप से जानने के लिए क्रमिक पुस्तकमाला–बरखा से कुछ उदाहरण यहाँ दिए गए हैं।

पूर्व में दिए गए विवरण से स्पष्ट है कि बरखा की कहानियाँ बच्चों को स्वयं अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर और पढ़ने का आनंद देने के तथा बच्चों में जेंडर के मुद्दे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास में भी सहायक हैं। लेकिन बच्चे इस पुस्तकमाला का सही ढंग से उपयोग करें, यह काफी सीमा तक शिक्षक पर भी निर्भर करता है।

इस पुस्तकमाला को पढ़ना इसकी कक्षा में उपलब्धता पर निर्भर करता है। अतएव सर्वप्रथम दायित्व इस पुस्तकमाला की कक्षा में उपलब्धता करवाना है। अच्छा हो कि प्रत्येक कक्षा में (कक्षा 1 और 2) इस पुस्तकमाला के दो सेट हों। इस क्रमिक पुस्तकमाला को कक्षा में रीडिंग कॉर्नर में अथवा ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे उसे सरलता से उठा सकें। यह पुस्तकमाला बच्चों के लिए ही है, इसलिए बच्चों को देते समय किताबों के फटने या खराब होने की चिंता न करें। यह बच्चों के स्वयं अनुमान लगाकर पढ़ने के लिए है, इसलिए उन्हें इसे स्वयं पढ़ने के अवसर दें।

यह पुस्तकमाला चार स्तरों में विकसित है। यह प्रयास करें कि बच्चे कहानियों को स्तरवार पढ़ें अर्थात् पहले स्तर की दस कहानियाँ पढ़ने के बाद वे दूसरे स्तर की कहानियाँ शुरू करें और इस प्रकार क्रमवार चौथे स्तर तक जाएँ। यद्यपि इस पुस्तकमाला की कहानियाँ चार स्तरों में विकसित हैं लेकिन इस वर्गीकरण को एक कठोर नियम न मानें। यदि कोई बच्चा तीसरे या चौथे स्तर की किताब पहले उठा लेता है तो उसे डाँटें नहीं। इसी प्रकार यदि कोई बच्चा एक ही कहानी को बार-बार पढ़ना चाहता है तो भी उसे टोके नहीं अथवा तीसरे स्तर पर

पहुँचने के बाद पुन: पहले स्तर की कहानी की किताब पढ़ना चाहता है तो भी उसे रोकें नहीं। ऐसा होना स्वाभाविक है। जो कहानी बहुत अच्छी लगती है, उसे बार-बार पढ़ने का मन करता है। इसके अतिरिक्त कुछ कहानियाँ पढ़ लेने के बाद बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ जाता है और वह स्वत: ही उन कहानियों को दोबारा पढ़ना चाहता है। यह इस बात का सूचक है कि बच्चे में पढ़ने की ललक और आत्मविश्वास बढ़ रहा है। इसलिए इस पुस्तकमाला के कक्षा में उपयोग में लचीलापन बरतना आवश्यक है। इसके साथ ही बार-बार पढ़ने से बच्चों द्वारा कहानियों में निहित संदेशों का विश्लेषण भी संभव है। पढ़ी हुई कहानी को दोबारा पढ़ने से वे अपने निजी अनुभवों के साथ संबंध स्थापित करने का भी प्रयास करेंगे और बेहतर तरीके से निजी जीवन में सामंजस्य स्थापित कर पाएँगे।

पाठ्येतर सामग्री पर चर्चा

शिक्षक स्वयं पुस्तकमाला की कहानियों तथा इस पुस्तकमाला के सेट के साथ दी गई विवरणिका को पढ़ें ताकि बच्चों के साथ कहानियों, कहानी के पात्रों तथा चित्रों पर विस्तार से चर्चा कर सकें। बरखा की कहानियों में समाहित मूल्यों को समझें। इसकी कहानियों में मूल्य इस तरह से पिरोए गए हैं कि मानवीय संवेदना स्वयं ही उभर आती है।

कहानियों पर चर्चा के दौरान बातों ही बातों में इनके पात्रों पर भी चर्चा करें। जैसे बच्चों से उनके मनपसंद खेलों पर चर्चा से शुरूआत करते हुए पुस्तकमाला की कहानियों झूला, आउट, गिल्ली-डंडा, छुपन-छुपाई पर बातें करें। **झूला** कहानी में किस प्रकार बबली द्वारा **झूलने** का तरीका सुझाते हुए टायर को उछालकर पेड़ में लटकाकर झूला बनाना, कहानी **आउट** में अपनी सूझ-बूझ से काम लेकर बबली द्वारा कपड़े की गेंद बनाना, आदि बातों पर चर्चा करते हुए कक्षा में उपस्थित बच्चों से पूछना कि क्या कभी उन्होंने भी ऐसा ही कोई खेल सुझाया है? हाँ, तो कब और कौन-सा? इस प्रकार का संवाद बच्चों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अवसर देगा। हो सकता है कि चर्चा के दौरान कक्षा की कोई छात्रा किसी खेल के दौरान अपनी तत्पर बुद्धि का परिचय देने की बात सभी सहपाठियों के समक्ष उजागर करे और कोई छात्र अपनी यह बात छुपाना न चाहे कि किस प्रकार उसने खाना बनाने में सहायता की या वह रसोई में क्या-क्या काम कर सकता है।

इसी प्रकार से **मिली की साइकिल** कहानी पर कक्षा में हुई चर्चा अन्य बच्चों को भी समय के साथ आगे बढ़ने और समय की रफ़्तार से चलने का संदेश देगी और कक्षा की प्रत्येक छात्रा अवश्य ही मिली जैसी बनना चाहेगी।

चाय, फूली रोटी, भुट्टा, चावल, पत्तल कहानियों पर बातचीत करते समय बच्चों से पूछें कि कौन-कौन घर के कामों में बड़ों की सहायता करता है। फिर इन कहानियों के मुख्य पात्र जमाल और मदन द्वारा मिल-जुलकर चाय बनाने, भुट्टा भूनने, चावल पकाने और इन कार्यों के दौरान उन्हें मिलने वाले आनंद पर बात करें।

इन कहानियों पर की गई बातचीत नन्हे हृदयों में बचपन से ही घर के कामों में सहयोग करने की भावना को विकसित करने में सहायक होगी।

उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि किस प्रकार बरखा की कहानियाँ बच्चों को लैंगिक समानता के मुद्दे के प्रति संवेदनशील बना सकती हैं।

उपरोक्त उदाहरणों से आप अवगत हो गए होंगे कि किस प्रकार कहानी, उसकी घटनाओं तथा पात्रों पर चर्चा द्वारा बच्चों में जेंडर के मुद्दे के प्रति संवेदना जाग्रत की जा सकती है।

सारांश

इस प्रकार अतिरिक्त पठन सामग्री की सहायता से शिक्षक बच्चों में लैंगिक समानता के प्रति बचपन से ही स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास कर सकते हैं। शिक्षक का यह कदम बच्चों को निश्चित रूप से आजीवन जेंडर के मुद्दे के संबंध में सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों और दुराग्रहों से मुक्त रखेगा। लिंग आधारित पूर्वाग्रहों से मुक्त विषय सामग्री के कक्षा में उपयोग के समय चर्चा के दौरान शिक्षक को अनेक अवसर मिलते हैं जिनसे बच्चों में लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके साथ ही लैंगिक असमानता के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण भी। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक इन अवसरों का सही ढंग से उपयोग करे।